Q.P. Code: 00003491

समय :३ घंटे **कुल अंक : १००**

(कृपया जांचे कि आपको सही प्रश्न पत्र मिला है कि नहीं |)

सूचना : १. सभी प्रश्न अनिवार्य है |

२. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक हैं |

३. उत्तर पुस्तिका में प्रश्न क्रमांक व उप क्रमांक अवश्य लिखे |

प्रश्न १. **निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए |** **(३०)**

क. 'अधरो में राग अमंद पिए
अलकों में मलमज बंद किए
तू अब तक सोयी है आली !
आखों में भरे विहाग री !'

अथवा

"वह आता'
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
'चल रहा लुकटिया टेक, '

ख. "लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पलट दी, और बोला - जी चाहता है, जीभ पकड़ कर खींच लूँ|"

अथवा

"तरक्की यूँ ही हो जाएगी? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वरना, उसकी खिदमत करने वाले कम थोड़े हैं?"

प्रश्न २. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए** **(२०)**

च. 'भिक्षुक' कविता का उद्देश्य लिखिए |

अथवा

'पुष्प की अभिलाषा ' कविता का भावार्थ लिखिए |

छ. खड्ग सिंह ने बाबा का घोड़ा कब और कैसे क्यों वापस कर दिया ?

अथवा

'चीफ़ की दावत' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए |

प्रश्न ३. **निम्नलिखित टिप्पणियों के उत्तर दीजिए।** **(१०)**

ट. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का केन्द्रीय भाव |

अथवा

'दीया जलाना कब मना है' कविता का केन्द्रीय भाव |

ठ. मधूलिका का चरित्र-चित्रण कीजिए |

अथवा

सुलतान की प्रमुख विशेषताएं |

152C7CB63CA8300FFA3732935A2F16A4

प्रश्न ४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। **(१०)**

१. भिक्षुक किसके सहारे चलने की कोशिश कर रहा है ?
२. कवि मनुष्य से क्या करने को कह रहा है ?
३. पुष्प किसके गहनों में नहीं गुंथना चाहता है ?
४. सिंधिया कहाँ से भाग गया था ?
५. कल्पना के हाथों किस मंदिर को गढ़ा गया ?
६. भूपसिंह कौन थे ?
७. अरुण कौन था ?
८. बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था ?
९. माँ कहाँ जाना चाहती थी ?
१०. बुआ किस दिन पाजेब लेकर आई थी ?

प्रश्न ५. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए। **(१०)**

(त) परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर पिताजी को पत्र लिखिए।

अथवा

छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

प्रश्न ६. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **(१०)**

(१) निम्नलिखित वाक्य का शुद्ध रूप लिखिए।

(प) रीमा की नई बहु आई है।
(फ) परीक्षा के परिमाण आने ही वाले है।

(२) निम्नलिखित वाक्य में संज्ञा शब्द पहचानिए।

(ब) उसमें मानवता है।
(भ) मुझे पटना जाना है।

(३) निम्नलिखित वाक्य में सर्वनाम शब्द पहचानिए।

(म) उसका काम कर दो।
(य) मेरी चाबी खो गई है।

(४) निम्नलिखित वाक्य में क्रिया शब्द पहचानिए।

(र) अजय कहानी पढ़ रहा है।
(ल) नानी ने कहानी सुनाई।

(५) निम्नलिखित वाक्य में विशेषण शब्द पहचानिए।

(व) वह मेरा छोटा भाई है।
(श) कोई सज्जन आए हुए हैं।

152C7CB63CA8300FFA3732935A2F16A4

(आ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए | **(१०)**

शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है इससे आशंका और संदेह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती ।

अधिकारी अधीनस्थ, शिक्षक शिक्षार्थी, छोटों बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृध्दि स्वतः ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। इस गुण के माध्यम से छोटे से छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है।

शील कोई दुर्लभ और दैवीय गुण नहीं हैं। इस गुण को अर्जित किया जा सकता है । पारिवारिक संस्कार इस गुण को विकसित और विस्तारित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। मूल भूमिका तो व्यक्ति स्वयं अदा करता है। चिन्तन, मनन, सत्य-संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से इस गुण की सुरक्षा और विकास होता है। यह शील सुसंस्कृत मनुष्य के चरित्र का अभिन्न अंग है।

यह गुण मनुष्य को सच्चे अर्थों में मानव बनाता है। इस अमूल्य गुण को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। इससे मनुष्य की गरिमा बढ़ती है और उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लग जाते हैं।

१. शीलयुक्त व्यवहार की क्या विशेषता है ?
२. शीलवान व्यक्ति की क्या विशेषता होती है ?
३. शालीनता जैसे गुण की उपस्थिति के क्या फायदे हैं ?
४. शील को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर क्या होता है ?
५. मनुष्य अपने भीतर शील को किस प्रकार विकसित और सुरक्षित कर सकता है ?

152C7CB63CA8300FFA3732935A2F16A4